प्रथम अध्याय

प्रथम अध्याय

" मेहरुन्निसा परवेज : व्यक्तित्व और कृतित्व "

प्रस्तावना -

मेहरुन्निसा परवेज आधुनिक हिंदी साहित्य की लेखिकाओं में बहुचर्चित नाम है। सुसंस्कृत, व्यक्तित्व-संपन्न, प्रगतिशील विचारधारा की ' मुस्लिम स्त्री ' इस नाते, उनका अलग एवं विशेष स्थान है। हिंदी साहित्य में मुस्लिम मध्यवर्गीय चेताना की लेखिका के रूप में मेहरुन्निसा परवेज की एक अलग पहचान है। उन्होंने बड़ी सरलता और ईमानदारी से जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया है। साथ ही रागात्मकता और भावुकता को भी अपने लेखन का अनिवार्य तत्त्व मानकर ग्रहण किया है।

लेखिका ने अपने साहित्य में मुस्लिम समाज में व्याप्त अनाचार, दिनोदिन टूटते जीवनमूल्य और आर्थिक विपन्नता का सजीव चित्रण किया है। नारी के पीड़ाभरे जीवन के प्रति लेखिका को गहरी सहानुभूति है। अपने साहित्य में उन्हांने नारी की व्यथा-कथा को अनेक दृष्टियों से देखा और प्रस्तुत किया है। उन्होंने जो भी लिखा है, वह स्वयं भोगा, देखा और जाना है। मेहरुन्निसा परवेज जी ने अपने निजी जीवन में जिस जहर की कड़ुवाहट का अनुभव किया उसकी झलक उनकी रचनाओं

में परिव्याप्त हुए बिना न रही । सीधी-सरल भाषा में मन की बात सुनााने की कला मेहरुन्निसा परवज के पास है। मेहरुन्निसा परवेज जी का लेखन जीवन की समग्रता का प्रस्तुतीकरण लेकर सामने आता है।

मेहरुन्निसा परवेज के व्यक्तित्व के बारे में हमें बहुत कम परिचय मिला है, फिर भी उनकी रचनाओं के माध्यम से इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को समझने के लिए उनकी जीवनी तथा उनके साहित्य को समझना आवश्यक है।

१.१ *व्यक्तित्व* -

१.१.१ *जन्म* -

मेहरुन्निसा परवेज का जन्म मुस्लिम परिवार में १० दिसम्बर, १९४४ में बहेलगाँव, जिला बालाघाट में चलती बैलगाड़ी में हुआ । अजान में ही उनका नाम मेहरुन्निसा रख गया । इतिहास प्रसिद्ध नूरजहाँ का पहला नाम भी मेहरुन्निसा था, उनका जन्म भी इसी प्रकार चलती बैलगाड़ी में हुआ था। इसलिए इनका नाम भी मेहरुन्निसा रखा गया । मेहरुन्निसा शब्द का अर्थ है - ' प्यार करनेवाली स्त्री '।

१.१.२ *माता-पिता* -

मेहरुन्निसा जी के पिता अे.एच.खान ' डिप्टी कलेक्टर ' थे । माताजी का नाम शहजादी बेगम था और वे मुगल घराने की थी । उनके पिताजी आधुनिक विचारों के थे । वे पूरे अंग्रेजी तौर-तरीके में रहते थे। उनकी माँ गाँव की थी । वे सीधी साधी मुस्लिम परिवार की थी । इसके बाबजूद भी वह बहुत खुले विचारों की थी, उनमें दकियानूसीपन

बिल्कुल नहीं था । उनके पिता भी खुले विचारों के थे। परदा प्रथा तथा धर्म आदि पर ज्यादा विश्वास नहीं था।

१.१.३ बचपन –

मेहरून्निसा परवेज का बचपन कड़ुवाहट से भरा हुआ है। आम बच्चों की तरह उन्हें अपने घर में वह प्यार, वह शांति नहीं मिली जो दूसरे परिवारों में पायी जाती है। अपने माता-पिता के दाम्पत्य-सम्बन्धों की कटुता बचपन से ही वह दुबली-पतली,गोरे रंग की बालिका (मिहरुन्निसा) सहमी आँखों से देखा करती थी। स्वयं मेहरून्निसा जी कहती है –

" हर दिन, हर रात, हर बात पर घर में झगड़े होते और झगड़े भी ऐसे कि सारे मोहल्ले में आवाज गूँजती और हम दो भाई-बहन घर के किसी सुने कमरे में, अँधेरे में एक दूसरे से चिपटे हुए रोते रहते। जब से होश सँभाला अपने घर में शीशे के टुकड़े, खून और आँसू ही देखे । औरों के घर से हमारे घर का वातावरण इतना भिन्न क्यों है, समझमें नहीं आता ।''[१]

घर के तनावग्रस्त वातावरण ने बालिका मेहरुन्निसा को शरीर से कमजोर और मन से दब्बू बना दिया । माता-पिता की उपेक्षा पाकर उस बच्ची का अधिकांश समय बाग-बगीचों में, तालाब के किनारे या चपरासियों के बच्चों के साथ खेलते व्यतीत होता । इन्हीं घरेलू झगड़ों की वजह से बहुत छोटी उम्र में वह मुस्लिम समाज की जड़ मान्यताओं और रूढ़ियों से परिचित हो गयी थी । कभी ननिहाल तो कभी ददिहाल रहते हुए

---

१ सं. डॉ. मधुकर सिंह – गर्दिश के दिन, पृष्ठ – ३०।

पिता के दूसरे विवाह की खबर पाकर उसके बालमनपर क्या बीती होगी वही जानती है।

१.१.४ *शिक्षा* –

पिता के प्रशासनिक विभाग में कार्यरत होने के कारण मेहरुन्निसा को कई शहरों में रहने का अवसर प्राप्त हुआ है। लेकिन उनकी प्राथमिक शिक्षा भी इससे प्रभावित हुई है। सारंगगढ़, जशपुर, मनेन्द्रगढ़, अंबिकापुर, बालाघाट, जगदलपुर, बुलढाणा तथा खामगाँव अदि जगहों से उन्होंने प्रथमिक शिक्षा प्राप्त की । उनकी शिक्षा हिंदी और मराठी माध्यमों से हुई । चौथी कक्षा के बाद उनका परिवार बस्तर आ गया । उनका बचपन बस्तर के आदिवासियों के बीच गुजरा इसलिए वहाँ की जीवन-शैली, समस्याओं और रीति-रिवाजों को उन्होंने अपने साहित्य में उजागर किया है।

नौवीं कक्षा तक की पढ़ाई नियमित रूप से स्कूलों में हुई है। विवाह हो जाने के कारण बीच में उनकी पढ़ाई छूट गयी। फिर कई सालों के बाद टुकड़ों में उन्होंने एम्.ए. तक की पढ़ाई पूर्ण की ।उनके अथक परिश्रम और संघर्ष के परिणाम स्वरूप वह आगे बढ़ती चली गयी ।

१.१.५ *वैवाहिक जीवन* –

सन् १९५९ में पन्द्रह साल की आयु में श्री राऊफ परवेज से उनका विवाह हो गया जो उर्दू के प्रसिद्ध शायर थे । वैचारिक भिन्नता के कारण सन् १९७६ में यह सम्बन्ध खत्म हो गया । सन् १९७९ में उन्होंने डॉ. भगीरथप्रसाद से अंतर्जातीय विवाह किया । उनके तीन बच्चे हैं – सलीम,

सिमाला और समर । लेकिन दुर्भाग्यवश सत्रह वर्ष की आयु में श्री समरप्रसाद का देहान्त हो गया । इस दु:ख से उभरने के लिए उन्होंने अपने दिवंगत पुत्र की स्मृति में ' समर-लोक ' त्रैमासिक की स्थापना की ।

१.१.६ *साहित्य सृजनारंभ* –

मेहरुन्निसा जी ने सन् १९६२ से लिखना आरंभ किया । सन् १९६३ में पहली कहानी ' पाँचवी कब्र ', ' नई कहानियाँ ' पत्रिका में छपी थी, जिसका पाँच भाषा में अनुवाद हुआ है। मेहरुन्निसा जी ने आज तक अनेक कहानियाँ, उपन्यास तथा लेख लिखे है जिनका परिचय उनके कृतित्व में आयेगा ।

१.१.७ *सफलता की ओर* –

जीवन सुख-दु:ख की आँख-मिचौनी है। मेहरुन्निसा जी को अपने बचपन तथा शादीशुदा जीवन में घूटन, तकलीफ, दु:ख इसके अलावा कुछ भी नहीं मिला। अकेलेपन का दर्द मन में लिए उन्होंने यह दिन बिताएँ। धीरे-धीरे मेहरुन्निसा के जीननाकाश से यह दुर्दिनभी दूर हुए और सन् १९६९ में उनका पहला उपन्यास ' आँखों की दहलीज ' प्रकाशित हुआ । यहाँ से फिर वह सफलता के नित नए सोपानों पर चढ़ती चली गयी । वर्ष १९७४ में जिला बस्तर की बाल एवं परिवार कल्याण परियोजना की अध्यक्षा बनने पर अदिवासियों और शोषित जनजातियों की समस्याओं से जुड़ी । दु:खद अतीत और सुखद वर्तमान के प्रति सर्वथा असंपृक्त रहकर ही उनका कलाकार मन कह सकता है –

' गुजरे हुए हादसों, बेहरम दिनों और उन बेतरतीब ख्यालों की जुगाली करना बेहद तकलीफ-देह है। जिन्दगी एक सफर है और अभी जानें कितनें मोड़ कितने उतारदेखना है ।''[१]

१.१.८ *प्रेरणास्रोत* -

मेहरुन्निसा जी अपने पिताजी से ज्यादा प्रभावित रही है, उनसे ही उन्हें लेखन-शक्ति प्राप्त हुई। शायद इसके परिणाम स्वरूप इनकी लेखन शैली पने पिताजी से मिलती जुलती है। हिंदी भाषा का प्रेम तथा पढ़ाई-लिखाई की प्रेरणा उन्हें पिताजी से ही प्राप्त हुई ।

माताजी से भी उन्हें लिखने की प्रेरणा प्राप्त हुई। वे मानती है --

" दर्द की पहचान मैंने माँ के द्वारा ही जानी,उन्हेंाने ही मुझे सिखाया कि दर्द क्या होता है।''[२]

अपने लेखन कार्य के प्रेरणास्रोत के सम्बन्ध में वे कहती है - " जैसे मैंने बड़े-बड़े महापुरूषों से तो जिन्दगी में सीखा ही है, उनकी जीवनी पढ़ी है, क्योंकि मेरे पिताजी की बहुत बड़ी लायब्ररी थी, तो उनकी पुस्तकों के बीच में मैंने अध्ययन किया है, लेकिन मैंने अपने आस-पास की जिन्दगी से भी अध्ययन किया है जैसे- एक मामूली सी चींटी, एक पक्षी, यह मौसम, पेड़ पौधे और यह महसूस किया है कि इन चीजों से मैंने बहुत

---

१ *सं. डॉ. मधुकर सिंह - गर्दिश के दिन, पृष्ठ, ३६, ४०।*

२ *नेमीचंद्र जैन - ऋतुचक्र, पृष्ठ - २६ ।*

सीखा उन्होंने मुझे बहुत शक्ति दी । जीवन में बहुत सँभाले रखा। मैंने इन लोगों से अधिक प्रेरणा ली, दुनिया से कम।''[१]

१.१.६ *सामाजिक कार्य-परिचय -*

अदिवासी एवं महिलाओं की सामाजिक समस्याओं के प्रति इनकी विशेष रूचि है। वर्ष १९७४ में ये बाल एवं परिवार कल्याण परियोजना, जिला बस्तर की अध्यक्षा रही । वर्ष १९७५ से ये आकाशवाणी सलाहकार समिती की सदस्या हैं। वर्ष १९७७ में बस्तर जिले की ओर से ये समाजकल्याण परिषद मध्यप्रदेश की सदस्या नियुक्त हुई। ये जिले की महिला काँग्रेस की अध्यक्षा भी रही।

१.१.१० *सम्मान एवं प्राप्त पुरस्कार -*

मेहरुन्निसा परवेज ने अपने लेखन से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। इस तथ्य को साहित्यिक जगत ने भी स्वीकार किया है, जिसके फलस्वरूप उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया है।

वर्ष १९८० में मध्यप्रदेश शासन द्वारा इन्हें राष्ट्रीय पारितोषिक " आखिल भारतीय महाराजा वीरसिंह देव पुरस्कार " इनके " कोरजा " उपन्यास पर प्रदान किया गया । इसी प्रकार उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा इसी उपन्यास पर उन्हें सन्मानित किया गया । सन् १९९५ में " ढहता कुतुबमीनार " कहानी संग्रह को सुभद्राकुमारी चौहान पुरस्कार दिया गया है। सन् १९९५ में हिंदी साहित्य

---

१ *नेमीचंद्र जैन - ऋतुचक्र, पृष्ठ - ३२ ।*

सेवा के लिए उनके योगदान पर उन्हें उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा साहित्यभूषण सम्मान से अलंकृत किया गया । सन् १९९५ में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी कीएक सौ पच्चीसवीं वर्षगांठ समारोह समिति द्वारा समाज सेवो के लिए उन्हें सम्मानित किया गया । सन् १९९९ में राष्ट्रभाषा की स्वर्णजयंती पर छटवें विश्व हिंदी सम्मेलन (लंदन) में हिंदी भाषा एवं साहित्य सेवा के लिए विशेष रूप से सम्मानित किया गया । इस प्रकार उन्हें सम्मानित करके समाज ने उनके लेखन और सामाजिक कार्यों को प्रोत्साहित किया है।

१.१.११ *साहित्य-सृजन का उद्‌देश्य* -

मेहरुन्निसा का साहित्य सहेतुक प्रयास का पुल है। उन्होंने जो कुछ भी लिखा है वह सप्रयोजन लिखा साहित्य है। इसकी पुष्टि करता उनका यह वक्तव्य इसका प्रमाण है -

" छोटे-छोटे सुख को जी लेना, छोटे-छोटे दु:ख में रो लेना और फिर धुले हुए चेहरे लेकर नयी सुबहको आँख खोलना ही शायद जिंदगी है। मुझे तो कभी वक्तव्य देना नहीं आया । मेरी कहानियाँ यदि अपना परिचय खुद न दे पायी, तो समझूँगी, मैंने जो जिया, जो पाया सब झूठ के सिवा कुछ भी नहीं।''[१]

इनकी साहित्यिक रचनाओं में आदिवासियों की गरीबी एवं शोषण की समस्यापर पैनी दृष्टि तथा सामान्य गरीबों के चित्रण को विशेष रूप से सराहा गया है। इनकी रचनाओं मे महिलाओं की दयनीय स्थिति, गरीबों के शोषण एवं अन्धविश्वास के विरूध्द विद्रोह की स्पष्ट झलक

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज - आदम और हव्वा, पृष्ठ - ७।*

दृष्टगत होती है। बस्तर जिले के आदिवासियों की समस्या, शोषित जातियों एवंसामान्य सामाजिक समस्याओं पर लिखे गये इनके लेख लोकप्रिय रहे हैं।

१.२ *कृतित्व* -

मेहरुन्निसा परवेज छत्तीसगढ़ की प्रथम लेखिका है। उन्होंने जीवन की विविध समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया है। उन्होंने कहानी, उपन्यास, आत्मचरित्र सभी विधाओं को सजाया है। मध्यप्रदेश एवं हरियाणा में तो इनकी कई पुस्तकें पाठयक्रम में रखी गई हैं। आदिवासियों की गरीबी एवं शोषण की समस्यापर पैनी दृष्टि तथा सामान्य गरीबों के चित्रण को विशेष रूप से सराहा गया है।

मेहरुन्निसा परवेज नारी स्वातंत्र्य की प्रबल हिमायती है, इन्हीं विशेषताओं की झाँकी इनके कथाओं और उपन्यासों मे दिखाई देती है। अपने चारों ओर की स्थितियों को और जिन्दगी के टुकड़ो को वे सहजता से अपने साहित्य में पिरौती है, यही उनकी एक अलग पहचान है। उनका साहित्य पढ़नेसे प्रतीत होता है जैसेउनके जीवन की सहज यात्रा कर रहे हैं। साहित्यिक-यात्रा के आरंभ में उन्होंने बस्तर के जीवन को आधार अनाया है। मुस्लिम परिवार की समस्याओं, आदिवासी जीवन की विषमताओं, पारिवारिक तनाव, महानगरीय संक्रमण, आर्थिक विपन्नता, नारी विषयक समस्याओं, नारी के बदलते स्वरूप, प्रेम के प्रति बदलते दृष्टिकोण अदि विषयोंपर उन्होंने अपनी लेखनी चलायी है।

मेहरुन्निसा परवेज की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ संक्षेप में क्रमशः इस प्रकार हैं -

१.२.१ *कहानी संग्रह -*

१.२.१.१ *आदम और हव्वा (सन् १९७२) -*

मेहरुन्निसा परवेज की समस्त कहानियों का कथा बीज परिवार, पारिवारिक सम्बन्ध अदि है। ' आदम और हव्वा ' कहानी संग्रह में संग्रहित कहानियों के आधार पर ही स्पष्ट होता है कि लेखिका ने कथाओं का मूलाधार पारिवारिक सम्बन्धों का विश्लेषण माना है। ' शनाख्त ' कहानी मे माँ - बेटी के अभावग्रस्त जीवन का चित्रण है। माँ-बेटी की विड़म्बना यह भी है कि सेक्स का भूखा बाप बेटी को ही वासना का शिकार बनाना चाहता है। पारिवारिक विघटन की घोर विडम्बना कहानी चित्रित करती है। ' सिर्फ एक आदमी ' कहानी में पिता के कारण बेटी प्रेमी से विवाह नहीं कर सकती थी, अत: बेटी पिता की मृत्यु की कामना करती है। ' उसका घर ' कहानी में यही समस्या है, अंतर सिर्फ इतना है कि पुत्री माँ की मृत्यु का इंतजार करती है। - ' अपने अपने दायरें ', ' तीसरा पेंच ', ' बंजर दोपहर ', ' चमड़े का खोल ', ' एक और सैलाब ', ' खाली आँखों की पीड़ा ' आदि कहानियों में परिवार का सबसे महत्त्वपूर्ण अंश जिस पर परिवार की नींव स्थित है वही ' दांपत्य जीवन ' किस प्रकार पति-पत्नी के विचारों में अंतर, विचारों का असांमजस्य, एक निष्ठता का अभाव, तीसरे का आगमन, घुटन, असंतोष अदि से व्याप्त हुआ है इसे लेखिकाने चित्रित करने का प्रयास किया है। दाम्पत्य जीवन की समस्याओं के साथ-साथ अंधविश्वास, महानगरीय समस्या, विधवा समस्या, दहेज की समस्या का अंकन कहानियों में बारीकी से हुआ है।

१.२.१.२ *टहनियोंपर धूप (सन् १९७७)* –

प्रस्तुत कहानी संग्रह में बारह कहानियाँ है। इस संग्रह की विशेषता है कि हर कहानी में दर्द की लकीर है, जो अपने आपमें अलग पहचान रखकर भी एक ही जंजीर में बँधी जाती है। ' हत्या एक दोपहर की ', ' खामोशी की आवाज ', ' टहनियोंपर धूप ', ' नंगी आँखोंवाला रेगिस्तान ' कहानियाँ नारी हृदय का आक्रंदन है, जो अपने पति द्वारा छली गयी है, जिन्हें स्नेह के बदले हमेशा पति की हिकारत ही मिली, चाहे पति हो या प्रेमी,जिन्होंने उन्हें समझने में गलती की है। ' गिरवी रखी धूप ', ' खूरचन ' मे रिटायर्ड वृद्धों की समसया को उजागर किया है। ' नया घर ', ' आतंकभरा सुख ' गरीबीपर चोट करनेवाली कहानियाँ हैं जिसके पात्र झोंपड़ी के सपने भी पूरे नहीं कर पाते, जिनके पास कफन के लिए भी पैसे नहीं है। ' कयामत आ गयी ', ' गुरूमंत्र ' कहानी में पुरूष केवल स्त्री को भोगवस्तु मानकर कैसे जी लेता है, यह बताया गया है। ' पाँच जन्म पाँच रूप ' तथा ' आरजू के फूल ' पति का पत्नी के प्रति प्रेम प्रकट करनेवाली कहानियाँ है।

१.२.१.३ *गलत पुरूष (सन् १९७८)* –

मेहरुन्निसा परवेज जी के इस कहानी संग्रह में सोलह कहानियाँ संग्रहीत हैं। प्रस्तुत कहानी संग्रह में विषय की विविधता है। ' टोना ' अंधश्रद्धा का चित्रण करनेवाली कहानी है। ' दूसरी अर्थी ', ' पाँचवी कब्र ', ' पसेरीभर–जवानी ' ये कहानियाँ आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त, दु:खी लोगों के लिए आदर्श और नैतिकता का कोई महत्त्व नहीं देता ये बताती है। पुरूष प्रधान समाज मेंनारी के मत की कोई कीमत नहीं होती । वह पुरूष की दासी मात्र है, जिसका काम जिंदगीभर डाँट,

फटकार, अपमान सहना है। ' आकृतियाँ और दीवारें ', ' रिश्ते ', ' बीच का दरवाजा ', ' साल की पहली रात ' ये कहानियाँ इस तथ्य को उजागर करती हैं।

' बिके हुए क्षण ', ' सलाखों फँसा आकाश ' कहानी में बताया है कि अपने कहलानेवाले रिश्ते भी खुदगर्जी में अंधे होकर धोखा देते है, माँ भी अपनी बेटी के हिस्से का सुख लेने में गैर नहीं मानती । ' बँटवारे की फाँस ', ' मंडेरों की दुपहर ', ' गलत पुरूष ' स्त्री के अंतर्मन के दर्द की कहानियाँ हैं, जो कभी नियतिद्वारा तो कभी इन्सानद्वारा प्रेम में धोखा खा चूकी है। कहानी का विचार पक्ष सशक्त है। प्रेम पंसंगों से कहानी रोचक बनी है। कहानियाँ समस्या प्रधान बनी हैं।

१.२.१.४ *फाल्गुनी (सन् १६७८) –*

इस कहानी संग्रह में सात कहानियाँ संग्रहीत हैं। इसकी विशेषता यह है कि ये सारी कहानियाँ नायिका प्रधान हैं तथा वे अपेक्षा भंग की आग मे जलती हैं। ' आकाशनील', ' रावण ', ' चुटकी भर समर्पण', ' कानीबाट ', ' बौना मौन ', ' ओस में डुबा गुलाब ', ' फाल्गुनी ' ये कहानियाँ स्त्री के अलग–अलग दु:खों का दस्तावेज हैं। नारी दु:ख के अनेक पहलू हैं जिसे केवल स्त्री ही समझ सकती है। इस कहानी संग्रह के संबंध में लेखिका का यह वक्तव्य ही इनकी पहचान कराता है --

" मेरी कहानियाँ हादसों का जमघट है, जो कण–कण जमकर पहाड़ हो गया है। उम्र का वह उतार–चढाव है, हादसों की वह धूप–छाँव है, जो उम्र के साथ घटती बढ़ती है। जिन्दगी के बेतरतीब दिन, जिन्हें मेरी

कलम ने हमेशा सही करना चाहा, पर जिन्दगी की यह पुस्तक कभी सही नहीं हुई, क्योंकि उसके कई-कई पृष्ठ गुम हो गये, नष्ट हो गये ।''

१.२.१.५ *अंतिम चढ़ाई (सन् १९८२) -*

इस कहानी संग्रह में सात कहानियाँ है। ' अंतिम चढ़ाई ', ' अयोध्या से वापसी ' कहानी की नायिका पति द्वारा छली गयी है। पर लेखिका ने अपने उद्देश्य को इनके द्वारा स्पष्ट किया है कि आ ।रत को अब हिम्मत से काम लेना है, उसका आत्मनिर्भर होना जरूरी है, भावुकता में बहकर अपने को बह जाने नहीं देना तो अड़िग रहकर मुकाबला करना है। ' बूँद का हक ', ' अपनी जमीन ' नारी मन की ममता तथा मातृत्व की प्यास स्त्री को कैसे मजबर कराती है, गलत से भी समझौता कराती है इसका चित्रण करनेवाली कहानियाँ हैं।

पति को थामना है तो सुन्दर होना जरूरी है तथा अपनी मुठ्ठी में ही पति को बाँधना आवश्यक है यह गुरूमंत्र ' गुरूमंत्र ' कहानी में दिया है। ' जमाना बदल गया है ' कहानी में वक्त के साथ-साथ वर्तमान आधुनिक परिवेश में ' परिवार ' अपना रूप किस प्रकार परिवर्तित कर रहा है इसका अंकन हुआ है। आधुनिकता के प्रभाव में रस्म-रिवाज, प्रथाएँ खोखली हो गयी हैं। आत्मीय संबंधों में आयी दूरी, पुरानी पीढ़ी के प्रति नयी पीढ़ी की उपेक्षा, वृद्धों की उपेक्षा, दाम्पत्य जीवन की असफलता, तलाक पीड़ित नारियों की समस्या इन समस्त पहलूओं का अंकन लेखिका ने बखूबी से किया है।

१.२.१.६ *ढहता कुतुबमानार (सन् १९८३) -*

मेहरुन्निसा परवेज का ' ढहता कुतुबमीनार ' कहानी संग्रह सन् १९९३ में प्रकाशित हुआ है परन्तु इसमें वह कहानियाँ संकलित की गइ है जो ' सारिका ' तथा अब तक प्रकशित कहानी संग्रहोंमें समाविष्ट हो गयी है। ' ढहता कुतुबमीनार ' शीर्षक कहानी ' कथा पीढ़ी विशेषांक ' सन् १९८५ में प्रकाशित हुई थी । प्रस्तुत कहानी में आधुनिक वर्तमान युग में आपसी रिश्तों में निर्माण हुई दरारों का चित्रण है - माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, भाई-भाई आदि आत्मीय रिश्तों में स्नेह नहीं रहा है। स्वााभिमानी सपना ने ' नाम की पत्नी ' रहना स्वीकार नहीं किया अत: मेजर राहुल, नीलू से प्रेम करता है और विवाह के पश्चात भी वह प्रेमसंबंधों को समाप्त नहीं करना चाहता तो सपना इस बात के लिए सहमत नहीं होती । उसके माता-पिता भी यही कहते है कि वह समझौता करे, परंतु सपना दिल्ली शहर में किसी के आश्रय के बिना रहने का निर्णय लेती है। लेकिन हमारा संकीर्ण, संकुचित मनोवृत्ति का समाज स्त्री का नौकरी करके अकेला रहना भी स्वीकार नहीं करता । ' क्यामत आ गयी ', ' नंगी आँखों वाला रेगिस्तान ', ' हत्या एक दोपहर की ', आदि कहानियाँ ' टहनियों पर धूप ' कहानी संग्रह की है। ' सिर्फ एक आदमी ', ' उसका घर ', ' आदम और हव्वा ' कहानी संग्रह की हैं। ' ओस में डुबा गुलाब', ' आकाश नील ', ' फाल्गुनी ' कहानी संग्रह की कथाएँ हैं।

' टूटने से पहले ' कहानी पारिवारिक आत्मीय रिश्तें में ' अर्थ ' के कारण निर्माण दूरी का चित्रण करनेवाली कहानी है। ' देहरी की खातिर ' कहानी कुँवारी मातृत्व की समस्या को उद्‌घाटित करती है। असफल दाम्पत्य जीवन, शराबी-जुआरी पिता के कारण उत्पन्न विभीषिका, अतृप्त वासना, परिवार की टूटन आदि विविध समस्याएँ, सुरजनी, पिता,

चाचा, काकी आदि पात्रोंद्वारा चित्रित है। ' भाग्य ' कहानी में उस ममतामयी माँ की मृत्यु के पश्चात उसकी लाशपर आँसू के दो बूँद गिरानेवाला भी कोईनहीं है। अगर पुत्र की जगह पुत्री होती तो माँ के लिए आँसू बहाकर ' ममता ही ममता का मोल समझ सकती है ' इस उक्ति को सार्थ कर देती – यह सत्य इस कहानी की अम्मा द्वारा प्रतिपादित किया है।

तात्पर्य चर्चित कहानी संग्रह की समस्त कहानियों की विशेषता यह है कि ' विषय एवं शैली ' में समानता होते हुए भी हर एक कहानी का कथाबीज रोचक एवं नवीन है। आम कहानियों का मूल स्वर नारी पीड़ा का अंकन है। अनमेल विवाह, सेक्स, प्रेम,नारी–पुरूष की पराधीनता, अंधश्रद्धा एवं रूढ़ी परंपराओं से ग्रस्त समाज, मुस्लिम समाज जीवन, गरीबी, बहुविवाह पध्दती आदि समस्याओं का उद्घाटन कहानियों के अंतर्गत हुआ है।

इन कहानि संग्रहों के अतिरिक्त उनके ' एक और सैलाब ' (१९९०), ' सोने का बेसर (१९९१) ', ' अयोध्या से वापसी ' (१९९१), ' रिश्ते ' (१९९२), ' अम्मा ' (१९९७) और ' समर ' (१९९९) आदि कहानी संग्रह प्रकाशित हुए है। उनके द्वारा लिखी गयी कुछ कहानियाँ ऐसी भी है जो कहानी–संग्रहों में संग्रहित न होकर पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है। ऐसी कहानियाँ निम्नलिखित है ' कोई नहीं '[१] ,' बड़े लोग '[२] , ' जूठन '[३] और ' लाल गुलाब '[१] ।

---

१ *मेहरुन्निसा - कोई नहीं, धर्मयुग, ५ दिसंबर, १९८२।*

२ *मेहरुन्निसा - बड़े लोग, धर्मयुग, १३ मार्च, १९८३।*

३ *मेहरुन्निसा - जूठन, धर्मयुग, जून, १९९६।*

१.२.२ *उपन्यास* –

१.२.२.१ *आँखों की दहलीज (सन् १९६९)* –

मेहरुन्निसा परवेज जी का पहला उपन्यास है ' आँखों की दहलीज '। इसमे सेक्स के विविध रूपों को उभारा गया है। नारी जीवन की सार्थकता उसके स्त्रीत्व में नहीं, मातृत्व में है, यही लेखिका की इस उपन्यास में मान्यता है। तालिया का पति शमीम है। डॉक्टर जब कहता है कि जीवनभर यह स्त्री माँ नहीं बन सकती, तो न सिर्फ पति, बल्कि माँ औरउसकी सहेली जमीला भी दु:खी होती है। एक और युगल जावेद और रेहाना है। रेहाना जब दूसरे प्रसव के लिए मायके जाती है तो इस बीच उसका पति अकेला हो जाता है। तालिया की माँ स्वयं संतान की आशा में अपनी बेटी और जावेद का मिलन करा देती है। पर तालिया के मन में इतनी आत्मग्लानि जागती है कि वह खिड़की से कूदकर आत्महत्या करना चाहती है। पति या प्रेमी में से किसे चुने, उसकी दुविधा यही है । बच जानेपर दोनों को ही छोड़कर वह किसी अनजान दिशा में चल देती है।

यह उपन्यास नारी जीवन के अधूरेपन को लेकर चलता है, जिसमें नारी जीवन के अंतरमंथन को, उसके जीवन की निराशा, छटपटाहट को लेखिका ने सच्चाई के साथ चित्रित किया है। तालिया माँ न बन सकने की कसक लिए तथा जावेद के साथ अचानक बन गय शारीरिक संबंधों का तनाव लिए एक अधूरी नारी है। और अंत में वह अपनी निराशाजनक पराजय, अपने जीवन की असार्थकता को स्वीकार करते हुए जमीला एवं शमीम को जोड़कर किसी अनभिज्ञ दिशा में बढ़ जाती है।

---

1 *मेहरुन्निसा - लाल गुलाब, समर लोक, अक्तूबर-दिसंबर, २०००।*

१.२.२.२. उसका घर (सन् १९७२) -

मेहरुन्निसा परवेज का ' उसका घर ' एक मध्यवर्गीय ईसाई परिवार की आंतरिक टूटन पर आधृत उपन्यास है। इसके मुख्य बिन्दु तीन है - एलमा, रेशमा तथा आंटी । एलमा तलाकशुदा युवती है, जो जीवनपर्यन्त आघात सहती रहती है। उसपर दमे की जानलेवा रोग झेलती हुई एकाएक लड़खड़ा जाती है। जब उसका भाई चंद सिक्कों के लिए उसे होटल के एक अँधरे कमरे में भेज देता है, जहाँ वह बिना किसी प्रतिवाद के भद्दे और घिनौने ' बॉस ' की कामना उत्तप्त करती रहती है। इसके विपरीत रेशमा अपने हिन्दू प्रेमी की प्रेमिका तथा एक बच्चे की बिनब्याही माँ होते हुए भी पश्चाताप के स्थानपर अधिकारों की माँग करती है। एलमा का बिना प्रतिरोध के घिनौनी स्थितियों को सहते चला जाना गले से उतरता नहीं । रेशमा इसकी अपेक्षा में अधिक सशक्त पात्र है। एलमा जहाँ बिना कुछ पाए सब खोती चली जाती है, वहाँ रेशमा बिना कुछ खोए सब कुछ पाने का सार्थक प्रयत्न करती है।

' उसका घर ' उपन्यास वर्तमान खोखली पारिवारिक व्यवस्था तथा भ्रष्ट समाज से जुड़ी एक दु:खद सच्चाई है। डॉ. रामदरश मिश्र ने इस उपन्यास के सम्बन्ध में लिखा है कि - " यह उपन्यास न तो नारी की यातना को बहुत गहाराई से उभरकर हमें उद्विग्न कर पाता है और न बोध्दिक धरातलपर कोईसमकालीन गहरा प्रश्न ही उभारता है। कारण यह है कि उपन्यास के केन्द्र में स्थित एलमा बहुत ही सीधी, समर्पणमयी और इकहरे व्यक्तित्व की नारी है। वह सब कुछ चुपचाप सह लेती है। इसलिए उसके भीतर प्रश्न में से प्रश्न, या यातना में से यातना या चोट में से विद्रोह फूटता ही नहीं । वह चुपचाप तलाक सह लेती है, चुपचाप आहुजा

की अंकशायिनी बनना स्वीकार कर लेती है और पाठक को लगता है कि ऐसे पात्रों की नियति यही हो सकती है।''[१]

१.२.२.३ कोरजा (सन् १९७७) -

' कोरजा ' लेखिका का श्रेष्ठ उपन्यास है। जिसमें मुस्लिम संस्कृति और जीवन का व्यापक चित्रण है। कोरजा का आशय अनाज की उन बालियों से है, जो खेत कट जाने के बाद वहाँ पड़ी रहती है और जिन्हें गरीब लोग बटोरकर ले जाते हैं।इस उपन्यास के पात्र मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार से लिए गये हैं। बस्तर और जगदलपुर के नाम छोड़ दिए जाए तो इन्हें देश के किसी भी भाग के विपन्न मुस्लिम वर्ग का माना जा सकता है। पति-पत्नी के मध्य तनाव, रात-दिन की अशांति, मुस्लिम समाज की जड़ रूढ़ियाँ उपन्यास में चित्रितहै। सेक्स समस्या का एक नया रूप भी यहाँ वर्णित है। कहीं बाप की जवान बेटी पर नजर है, कहीं माँ-बेटी दोनों एक ही पुरूष से जुड़ी हैं। और कहीं आर्थिक मजबूरियों के कारण नारी देह का खुला क्रय-विक्रय है। पूरे उपन्यास में नारी जीवन की त्रासदी व्यंजित है। प्रेम में आनेवाली बाधा कहीं आयु है, तो कही नपुंसकता। उपन्यास के पात्रों की संख्या अधिक है और पेंच-दर-पेंच डालकर प्रेम के विभिन्न स्वरूपों को दिखाया गया है। नसीमा के माध्यम से नारी-जीवन की व्यथा-कथा साकार हुई है। कहीं शिक्षा पर,कहीं शासन व्यवस्थापर और कहीं आदमी की संकीर्ण मानसिकतापर चुभते हुए व्यंग्य भी है। जिंदगी के विविध रंग,रूप और समस्याएँ उपन्यास में चित्रित हैं। लेखिक की कला का उन्नयन दर्शनीय है।

---

१ डॉ. रामदरश मिश्र - आज का हिंदी साहित्यः संवेदना और दृष्टि, पृष्ठ १४३,१४४।

इस उपन्यास के बारे में यह कहा जा सकता है कि इसमें जीवन के समान्तर एक और जीवन की व्याख्या की गई है। ' कोरजा ' की नसीमा, कम्मो, मोना अथवा अमित की आशा-अभिलाषाएँ कुछ और थी, किन्तु जीवन का कुछ ऐसा रूख रहा है कि भूली-बिसरी स्मृतियों के अतिरिक्त उनके पास कुछ भी शेष नहीं है।

१.२.२.४ *अकेला पलाश (सन् १९८१) -*

" अकेला पलाश '' यह मेहरुन्निसा परवेज लिखित उपन्यास बदलते सामाजिक संदर्भों को आत्मसात किए है। यह कृति नायिका तहमीना के पौरूषहीन पति एवं सुन्दर, स्वस्थ प्रेमी के त्रिकोण को लेकर लिखी गई है। प्रस्तुत उपन्यास युगानुरूपसामाजिक प्रयत्नों के अनेक प्रसंग एवं तथ्य लिए हुए है ।''[१]

इसके साथ ही इस उपन्यास में दाम्पत्य जीवन में आये ठंडेपन की समस्या को लेकर, लिखा गया है। तहमीना और जमशेद दम्पत्ति है। एक पुत्र की माँ होने पर भी तहमीना अपने दाम्पत्य जीवन में आये ठंडेपन की वजह स तुषार के साथ शारीरिक संबंध स्थापित करती है। पर वहाँ भी पुरूष से प्राप्त छली व्यवहार उसे ' अकेला पलाश ' बनकर सिर्फ अपने लिए जीवित रहने का निर्णय करवा देता है।

यह उपन्यास नायिका प्रधान है, जो पलाश की तरह वातावरण में रंग तो भरती है, पर उन फुलों को जुड़ें में समस्या नहीं जाता । तहमीना भी पति, बच्चा होकर अंदर से अकेली है। उसके अपनो ने ही

---

१ *डॉ. शीलप्रभा वर्मा - महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में बदलते सामाजिक सन्दर्भ, पृष्ठ २८।*

स्वार्थ के लिए उसका इस्तेमाल किया है। औरत के हिस्से में झूठ,फरेब, धोखा इसके सिवाय कुछ आता ही नहीं, मानो यही उसकी नियति है। प्रेम, स्नेह ऐसी पवित्र सुन्दर चीजे उसे मिलती है, वह भी भ्रष्ट होकर । ऐसे वक्तपर औरत यही सोचकर अपने दिल को तसल्ली देती है कि ' अकेला पलाश ' की तरह उसे अकेले ही रहना है जो पलाश लाल-चटक रंग का है, सुन्दर है, पर कोई भी उसे नहीं चाहता ।

अन्य पात्रों के माध्यम से उपन्यास में कहीं विभिन्न सरकारी विभागों के भ्रष्टाचार, कहीं अन्तर्जातीय विवाह और कहीं नारी जीवन की विविध स्थितियों का चित्रण हुआ है।

१.२.२.५ पत्थरवाली गली (सन् १९७८) -

साप्ताहिक हिंदुस्तान १७ से २५ नवम्बर, १९७८ में मेहरुन्निसा परवेज की लघु उपन्यासिका ' पत्थरवाली गली ' प्रकशित हुई । उपन्यास के कथानक का आधार मुस्लिम परिवेश है। इसमें आज के अभावग्रस्त समाज की विड़म्बना का बड़ा ही हृदयग्राही चित्रण किया है इस उपन्यास की जेबा एक चूडीवाली है और उसका दादा रिटायर फौजी । घर में घड़ी न होने के कारण दादा बार-बार समय पूछने के लिए उसे नुक्कड़ के घड़ीवाले के यहाँ भेजता है। एक दिन घड़ीवाला जेबा को अन्दर बुलाकर बलात्कार करने की कोशिश करता है, पर सफल नहीं हो पाता । जेबा का अक्का तस्करी के जुर्म में जेल भेजा गया है। अपने एक दोस्त के साथ हर चीज मिल-बाँटकर इस्तेमाल करने का उसका समझौता है, यहाँ तक कि बीवी भी । पर जेल से लौटने पर बीवी के पेट में दोस्त की संतान पाकर वह उसे बुरी तरह पीटता है और घर छोड़कर एक बाल-विधवा से शादी कर लेता है। दोस्त उसकी पत्नी को अपने घर रख लेता है। इधर जेबा

जब किसी को चूड़ी पहनाने गई है, तो घड़ीवाला उसपर बलात्कार करने में सफल हो जाता है। घर लौटकर वह दादा को सारी बात बताती है। अगली सुबह दादा का देहान्त हो जाता है। इस उपन्यास में भी नारी के प्रति पुरूष का भोगवादी दृष्टिकोण व्यंजित है।

१.२.३ लेख -

उपन्यास और कहानियों के अतिरिक्त उन्होंने अनेक लेख भी लिखे है। लेकिन इनकों अबतक संग्रहित नहीं किया गया है। यह ' धर्मयुग ' पत्रिका में प्रकाशित हुए है। उनके द्‌वारा लिखित लेख निम्नलिखित है --

१ ' आर्थिक, सामाजिक, नैतिक घुटन:कस्बों के आइने में जगदलपुर '[१]

२ ' रमजान की ईद '[२]

३ ' मासूम आँखों के सवाल '[३]

४ ' कुत्तों का ट्रेनिंग कॉलेज : पाठयक्रम जासूसी '[४]

---

१ मेहरुन्निसा परवेज - आर्थिक, सामाजिक, नैतिक घुटन : कस्बों के आइने में जगदलपुर - धर्मयुग, २८ सितम्बर, १९७१ ।

२ मेहरुन्निसा परवेज - रमजान की ईद, धर्मयुग, २८ सितम्बर, १९७५ ।

३ मेहरुन्निसा परवेज - मासूम आँखों के सवाल, धर्मयुग, २८ दिसम्बर, १९७७ ।

४ मेहरुन्निसा परवेज - कुत्तो का ट्रेनिंग कॉलेज : पाठयक्रम जासूसी, धर्मयुग, १९ जुलाई, १०८१।

५. 'बस्तर मड़ई '[१]

६ ' बाँछड़ा : रोशनी की पहली दस्तक '[२]

७. ' नागफनी का नंदन कानन '[३]

८ ' चरार-ए-शरीफ :वहाँ अभी इंसान की मुरादे जिंदा है '[४]
आदि।

१.२.४ *संस्मरण* -

मेहरुन्निसा परवेज द्वारा लिखित संस्मरण निम्नांकित है।

१ ' झरने के नीचे '[५]

२ ' वह क्षण जिसने जीवन को नया मोड़दिया : जशपुर जेल की नाशपाती '[६]

---

१ मेहरुन्निसा परवेज - बस्तर मंड़ई, धर्मयुग, ३० अगस्त, १९८१ ।

२ मेहरुन्निसा परवेज - बाँछड़ाः रोशनी की पहली दस्तक, धर्मयुग, १३ मई, १९८४ ।

३ मेहरुन्निसा परवेज - नागफनी का नंदन कानन-धर्मयुग, १५ जुलाइ,१९८४ ।

४ मेहरुन्निसा परवेज - चरार-ए-शरीफः वहा अभी इन्सान की मुरादे जिन्दा है, धर्मयुग, सितम्बर, १९९५ ।

५ मेहरुन्निसा परवेज - झरने के नीचे - धर्मयुग , ११ जून, १९६४ ।

६ मेहरुन्निसा परवेज - वह क्षण जिसने जीवन को नया मोड़ दिया : जशपुर जेल की नाशपाती - धर्मयुग, २८ जून, १९८१ ।

३ ईद की वह याद : जिन्दा रहने का एहसास ’ [१]

१.२.५ *संपादन* –

मेहरुन्निसा परवेज के सुख और शांति भरे जीवन में दु:ख के बादल भी कभी-कभी मंड़राते रहे । उनके सत्रह वर्षीय पुत्र, श्री समर प्रसाद के अकस्मात निधन (२८ अगस्त १९९८) ने उन्हें मानसिक रूप से बिखेर दिया। यह दु:खद स्थिति है कि जन्म दिन के चार दिन पूर्व ही श्री समर प्रसाद का देहान्त हो गया । अपने इसी दिवंगत पुत्र के स्मृति में वे ‘ समर लोक ’ त्रैमासिक पत्रिका का संपादन-प्रकाशन कर रही है। यह पत्रिका एक माँ का रचनात्मक समर-तर्पण है। अब उन्होंने पूरी तरह से अपने आपको इस पत्रिका को समर्पित कर दिया है।

निष्कर्ष –

अपनी संवेदनाओं, अनुभवों और विचारों को दूसरों तक अधिकाधिक मार्मिक एवं सक्षम रूपा में पहुँचाने की प्यास ही मेहरुन्निसा परवेज के साहित्य-सृजन का मुलाधार है। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बीच की रेखा बहुत बारीक है जिन्हें एक-दूसरे से अलग करना नामुन्किन है। उनके निजी अनुभुतियों की अभिव्यक्ति अनेक साहित्यिक निर्मितियों का मूलमंत्र है।

---

१ *मेहरुन्निसा परवेज – ईद की वह याद : जिन्दा रहने का एहसास, धर्मयुग, २५ जुलाई, १९८२।*

मेहरुन्निसा परवेज का नाम साठोत्तर महिला लेखिकाओं में उल्लेखनिय है। उनका जन्म १० दिसम्बर, १९४४ में मध्यप्रदेश के बालाघाट जिले के बहेलगाँव में हुआ । उनके पिता स्व. श्री. ए.एच.खान भारत सरकार के प्रशासनिक विभाग के अधिकारी थे और माँ स्व. शहजादी बेगम मुगल घराने से थी । सन् १९५९ में पंद्रह साल की आयु में श्री राऊफ परवेज से उनका विवाह हो गया । वैचारिक भिन्नता के कारण सन् १९७६ में यह संबंध खत्म हो गया । सन् १९७९ में उन्होंने डॉ. भगीरथ प्रसाद से अंतर्जातीय विवाह किया । उनके तीन बच्चे हैं - सलीम, सिमाला और समर । लेकिन दुर्भाग्यवश सत्रह वर्ष की आयु में ही श्री समरप्रसाद का देहांत हो गया । इस दु:ख से उभरने के लिए उन्होंने अपने दिवंगत पुत्र की स्मृति में ' समर लोक ' त्रैमासिक पत्रिका की स्थापना की है।

मेहरुन्निसा ने सन् १९६३ में साहित्य क्षेत्र में अपना पदार्पण किया। लेखन की प्रेरणा उन्हें अपने पिता से प्राप्त हुई। लेखन के साथ-साथ वे सामाजिक कार्यों से जुड़ी हुई है। पिछड़े वर्गों के विकास हेतु संगठित अनेक संस्थाओं की वे सक्रिय सदस्या है। उन्हें पुरस्कृत करके सरकार एवं अनेक संस्थाओं ने उनकी समाज सेवा को प्रोत्साहित किया है।

मेहरुन्निसा परवेज का लेखन जीवन की समग्रता का प्रस्तुतीकरण लेकर सामने आता है। सामाजिक व्यवस्था की अभिलाषा और यातना से मुक्ति पाने की छटपटाहट ही इनके लेखन का आधार है। मेहरुन्निसा के पात्र सामाजिक चट्टानों से टकराते नहीं, प्रत्युक्त जवन की राह बनाते हैं। मेहरुन्निसा ने अपने व्यापक अनुभव को ही अपनी रचनाओं का आधार बनाया है। उनकी रचनाओं में एक पुरूष-दो नारियाँ अथवा एक नारी - दो पुरूष के त्रिकोण बार-बार आवर्त की तरह घूमते रहते हैं। इन पुरूक्तियों से ऐसा लगता है कि मेहरुन्निसा के मन में कोई

ग्रंथि तो नहीं पनप रही है – " या कि इस समस्या के बिना कोई कथा रची ही नहीं जा सकती या कि यह किसी मानसिक बीमारी का संकेत है ? अगर ऐसा है, तो यह बहुत चिंता की बात है।''[१]

मेहरुन्निसा के साहित्य में नारी को भोग्या समझने की प्रवृत्ति, अस्तित्व एवं आत्मसम्मान के लिए संघर्ष करती मध्य-वर्गीय नारी, नारी के प्रति बढ़ती हिंसा, बदलते स्त्री-पुरूष संबंध, प्रेम एवं सेक्स के प्रति नवीन दृष्टिकोण, सामाजिक मूल्यों में आये बिखराव, अर्थ केंद्रित समाज की स्थापना, आर्थिक विपन्नता का परिणाम और धार्मिक सहिष्णुता आदि को चित्रित किया है। उन्होंने बस्तर क्षेत्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिवेश को भी अपने साहित्य में बाँधा है। अपने लेखों में उन्होंने इसी विषयों को आधार बनाया है। संस्मरणों में उन्होंने अपने बचपन की कुछ घटनाओं को मार्मिकता से प्रस्तुत किया है।

मेहरुन्निसा के व्यक्तित्व और कृतित्व के विवेचन विश्लेषण करने के पश्चात यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उनका कृतित्व उनके व्यक्तित्व से कुछ अलग नहीं है। उन्होंने अपने जीवन के अनुभव ही अपनी रचनाओं में व्यक्त किये हैं जिनके कारण उनके कृतित्वपर उनके व्यक्तित्व का गहरा प्रभाव दिखायी देता है। भले ही कथा-साहित्य में विषय की पुनरावृत्ति से नीरसता का अनुभव होता है लेकिन ये विषय समसामयिक हैं जो आज के समाज को नई दिशा प्रदान कर सकते हैं।

---

१ सं. कन्हैयालाल नंदन – सारिका – नवम्बर, १९७९ – अंक २५०, पृष्ठ ६६।